

पद २५५

(राग: काफी - ताल: दीपचंदी)

राखो मोरी लाज ये महाराज ॥ध्रु॥ पतितपावन प्रभु श्रीहरि दीन
के देवर भक्तन काज ॥१॥ तुमहि तारो तुमहि मारो । तुम भक्तनके
सिरताज ॥२॥ मानिक के प्रभु नाथ कृष्णजी शरन आये
यदुराज ॥३॥